• वसन्त की अष्टपदी •

*

सम्पादक- प्रेमलाल गो. मेवचा 'भक्तिप्रिय'

[પુષ્ટિમાર્ગીય મંદિરોમાં વસંત-ખેલસમયે हरिरिह व्रजयुवतीशतसंगे નું કીર્તનગાન થાય છે; પરંતુ જ્યાં સુધી એનો ગૂઢાર્થ હૃદયગ્રાહ્ય ન થાય ત્યાં સુધી એનો આંતરિક ભાવ સમજાતો નથી. ગીતસંગીતસાગર સેવાપરિપાટીપરિપોષક શ્રીમત્પ્રભુચરણ ગુસાંઈજી કૃત આ અષ્ટપદીના નિગૂઢ ભાવને વ્રજભાષા ટીકા સાથે લખાયેલ 'શૃંગારરસમંડન'ની હસ્તલિખિત પ્રતમાંથી અત્રે સાદર કરતાં આનંદ થાય છે. -તંત્રી]

शृंगाररसमंडन ग्रंथ में एक प्रकरण १० उल्लास को है। तामें मुख्य श्रीस्वामिनीजी को परस्पर विप्रयोग और क्रीड़ा श्रीगुसांईजी वर्णन करे हैं। तामेंकी 'अष्टपदी' जो बसंत के खेल में गाई जाय है ताकीं भाषा-टीका और मूल राग वसंत।

या अष्टपदी के पूर्व की कथा- श्रीस्वामिनीजी कों विप्रयोग करिकें विकल देखि के सहचरी है सो जहाँ निकुंज में दूसरे भक्तन के जूथ में प्रभु विहार करे हैं, ताके समीप दूसरी निकुंज में, जहाँतें श्रीस्वामिनीजी विहार देखें और श्रीस्वामिनीजी कों कोई देखे नहीं वहाँ लै जायके सहचरी वर्णन करे हैं-

(वसंत राग)

हरिरिह व्रजयुवतीशतसंगे।
विलसति करिणीगणावृतवारणवर इव रतिपतिमानभंगे ॥ ध्रुव. १ ॥

टीका—सहचरी कहे हैं—हे रतिपतिमानभंगे, अर्थात् हे राधिके! तुमने रतिपति-कामदेव ताको मानभंग अपनी सुंदरता करिकें कियो है, तातें तुम श्रीकृष्ण के मान को भी भंजन करोगी। विप्रयोग तें विकल मत होऊ। श्रीकृष्ण को विहार देखो, और सुनो। इति भावार्थ। अब सहचरी कहे हैं—हरि जो तुम्हारे मनहर्ता श्रीकृष्ण, या समे व्रजयुवतिन के जूथ शत में—सेंकड़न जूथ में जैसे गजेन्द्र, करिणीन झुंड में—समूह में घिर्यो करिणीन के संग रमण करे है (यथा भागवते 'इभराडिव भिन्नसेतुः'), तैसे क्रीड़ा करे हैं।

अब या जगे कोई शंका करे जो प्रभून की क्रीड़ा में सर्वत्र हस्ति के रमण को दृष्टांत क्यों दे हैं? ताको समाधान—रति को आनंद एक हस्ति ही जाने है। और एक हस्ति, अनेक हस्तिनीन को संतोष करे है। तहाँ दूसरो हस्ति भय करिकें आवे नहीं। कदापि आय जाय तो रमणकर्ता हस्ति ताकों तत्छन मार डारे। इत्यादि बात तें रसशास्त्र में उत्तम रमण को दृष्टांत हस्ति को है। अब या पद में 'रतिपतिमानभंगे' यह नाम श्रीस्वामिनीजी को है, ताको दूसरो अर्थ—श्री स्वामिनीजी, रति को गर्व, और रतिपति-कामदेव को गर्व, ये दोऊन के गर्व को भंजन करे हैं। रति को तो यह गर्व है, जो मेरे पति (कामदेव) की जैसी सुन्दरता है, तैसी कहूँ नहीं। सो यहाँ श्रीस्वामिनीजी के पति-श्रीकृष्ण की सुन्दरता देखिकें कामदेव मोहित होय है। तातें कोटिकंदर्पलावण्य और साक्षात् मन्मथमन्मथ यह सर्वत्र स्फुट है।

या प्रकार तो रति के गर्व को खंडन करे हैं। और कामदेव को यह गर्व है जो मैंने शिवजी सरिखेन को अपने वश करि लिये। एक मोहिनी के पीछे भगाय के स्वलित कर दीनो। सो यहाँ श्रीकृष्ण के पीछे अनेक शत मोहिनी डोले हैं, और सबन के मनोरथ आप पूर्ण करे हैं, और आप अच्युत बने हैं। या प्रकार कामदेव को मानभंजन करे हैं। अब आगे पद में सहचरी विहार-वर्णन करे है—

विभ्रमसम्भ्रमलोलविलोचनसूचितसञ्चितभावम् ।
कापि दृगञ्चलकुवलयनिकरैरञ्चति तं कलरावम् ॥२॥

टीका—हे श्रीराधिके ! देखो, या समे सब गोपिकान में कोई गोपी अपने नेत्रकमलन तें श्रीकृष्ण को पूजन करे है। 'अंच' धातु को अर्थ पूजा में है। अर्थात् अपने सुंदर कटाक्षन तें मोहित करे है। तब प्रभु, ताके संग विहार में निमग्न होयकें अपने चंचल सुंदर कटाक्षन तें संचित भाव की सूचना करे हैं। और मधुर वचन कामदेव के उद्‌बोधक बोले हैं। अथवा 'कलराव' पद को अर्थ– ता समय वेणुनाद करे हैं। यह पद में प्रथम 'सात्विक-सात्विक' भक्त के संग क्रीड़ा भासे है। काहेतें जो पूजन धर्म सात्विक है। तामें भी कमल करके सात्विक से सात्विक है। आगे दूसरे भक्त के संग विहार-वर्णन—

स्मितरुचिरुचिरतराननकमलमुदीक्ष्य हरेरतिकन्दम् ।
चुम्बति कापि नितम्बवती करतलधृतचिबुकममन्दम् ॥३॥

टीका– कोई नितंबवती गोपी अपने मनहर्ता—श्रीकृष्ण को सुंदर श्रीमुख निरखि कें अपने करतल तें चिबुक पकड़िकें श्रीमुख चुंबन करे है। सो मंद मुसकान करिकें अत्यंत सुशोभित है। तातें भक्तजनन के मन हरण करत हैं। और यहाँ गोपी को नाम 'नितबवती' है, ताको अर्थ—कटि के पीछे नीचे को भाग अति सुंदर जाको होय सो 'नितंबवती' कहावे है। और या पद में स्मित सात्विक धर्म, तामें चुंबन राजस धर्म है। अब आगे पद में दूसरे भक्त के संग विहार-वर्णन—

उद्‌भटभावविभावितचापलमोहननिधुवनशाली ।
रमयति कामपि पीनघनस्तन विलुलितनववनमाली ॥४॥

टीका—निधुवनशाली जो प्रभु, अर्थात् निधुवन को शोभित करवेवारे जो श्रीकृष्ण, सो कोई गोपांगना को अपने उद्‌भट भाव तें विभावित करकें ताके संग आप रमण करे हैं। अथवा गोपांगना के उद्‌भट भाव तें और चपलता तें आप मोहित होयकें रमण करे हैं। ता समय ताके अत्यंत सुंदर पीन स्तन के ऊपर आपकी नवीन वनमाला विलुलित होय है। या प्रकार 'सात्विक-तामस' भक्त के आप मनोरथ पूर्ण करे हैं। यह भक्तजन में प्रभून के अनुकूल रमण तो सात्विक धर्म, और उद्‌भट भाव तामस धर्म, या प्रकार भासे है।

निजपरिरम्भकृतेनुद्रुतमभिवीक्ष्य हरिं सविलासम् ।
कामपि कापि बलादकरोदग्रे कुतुकेन सहासम् ॥५॥

टीका–हे राधिका ! अब देखो। एक गोपांगना ने देख्यो, श्रीकृष्ण, क्रीड़ारस के वश दौरिकें आलिंगन के लिये चले आवे हैं। तब ताने बलात्कार एक दूसरी गोपांगना कों आगे कर दीनी। आप पीछे हट के हँसवे लगी। अथवा यह कौतुक देखिकें आप हँसे। यहाँ प्रभून को 'हरि' नाम करिकें ताने जान्यो जो सर्वत्र रस को हरण करे हैं। तातें अपनो रस अधिक पुष्टि के लिये दूसरी कों आगे के दीनी, आप पीछे हट गई। तातें यह भक्त 'राजस-राजस' है। और जो भक्त प्रभून के सन्मुख होयकें आलिंगन दीनो, सो भक्त 'राजस-सात्विक' है। या प्रकार दोय भक्त के संग क्रीड़ा या पद में भासे है। यह पद में संबोधन अध्याहार है। अब आगे पद में दूसरे भक्त के संग विहार-वर्णन—

कामपि नीविबन्धविमोकससम्भ्रमलज्जितनयनाम् ।
रमते सम्प्रति सुमुखि बलादपि करतलधृतनिजवसनाम् ॥६॥

टीका– हे सुमुखि श्रीराधिका ! देखो । श्रीकृष्ण या समय एक गोपी के नीवी के बंधन खोलवे को प्रवृत्त भये । तब ताके संभ्रम करिके नेत्र लज्जित होय गये और बल करिके नीवी को थामे है । अर्थात् बंधन खोलवे नहीं दे । ऐसी गोपांगना के संग आप रमण करे हैं । यह 'राजस–तामस' भासे है । काहेतें जो नेत्र लज्जित होने तो राजस धर्म, तामें हठ करनो यह तामस धर्म । अब आगे पद में दूसरे भक्त के संग क्रीड़ा–वर्णन सहचरी करे है—

प्रियपरिरम्भविपुलपुलकावलीद्विगुणितसुभगशरीरा ।
उद्गायति सखि कापि समं हरिणा रतिरणधीरा ॥७॥

टीका– हे सखि श्रीराधिका ! देखो । या समय एक गोपी जो रति–संग्राम में बड़ी निपुण है । प्यारे कीकृष्णकों आलिंगन करिकें ताको भयो जो हर्ष, तातें सर्वांग में रोमांच करिकें पहिले तें दूनी सुंदर पुष्ट भई है, और श्रीकृष्ण के संग मिलिकें ऊँचे सुर तें गान करे हैं । अर्थात् यह भक्त रति–संग्राम धीरे होय कें गान में प्रवृत्त भई, तातें 'तामस–सात्त्विक' भासे है । रति–संग्राम तामस धर्म, तामें गान सात्त्विक धर्म । अब आगे पद में दूसरे भक्त के संग क्रीड़ा–वर्णन—

विभ्रमसम्भ्रमगलदंचलमलयांचितमंगमुदारम् ।
पश्यति सस्मितमपि विस्मितमनसा सुदृशः सविकारम् ॥८॥

टीका– हे श्रीराधिका ! देखो, या समय एक गोपी विस्मय संयुक्त और मंदमुसकान संयुक्त अपने सुंदर नेत्र करिकें देखे है । ता समय श्रीप्रभून की शोभा, विहार के संभ्रम करिकें पीतांबर को अंचल लटके है । मलय जो चंदन तातें अंग चर्चित, और भक्तन के मनोरथ पूर्ण करवे में उदार और सविकार हैं । अथवा 'सविकार' पद को क्रियाविशेषण करके और विस्मित मन करके सूचित होय है । अथवा गोपांगना की अभिलाषा पूर्ण भई नहीं । आप समुदाय में क्रीड़ा करवे लगे, तातें कछू क्रोध दृष्टि सूं देखे हैं । तामें मंदमुसकान भी करे हैं । याहीतें यह भक्त 'तामस–राजस' भासे है । और चंदन चर्चित श्रीअंग है, तातें भासे है । गुलाल आदि वसंत के खेल की वस्तु भी सब होयगी । काहेतें जो यह 'अष्टपदी' वसंत के खेल में अवश्य गावे हैं । अब छेल्ले पद में 'तामस–तामस' भक्त के संग क्रीड़ा वर्णन करके, सहचरी 'अष्टपदी' समाप्त कर के श्रीस्वामिनीजी को अनुमोदन करे है ।

चलति कयापि समं सकरग्रहमलसतरं सविलासम् ।
राधे तव पूरयतुमनोरथमुदितमिदं हरिरासम् ॥९॥

टीका– हे श्रीराधिका ! देखो, या समय एक गोपांगना श्रीकृष्ण कें अपने संग ले जाय है, ता समय अत्यंत आलस- संयुक्त आप प्रभु हैं और विलास–संयुक्त भी हैं । तातें भक्तजन ने श्रीहस्त पकड़ लियो है । यहाँ ऐसे भासे है, भक्तजन तें संबंध छुड़ाय कें अन्यत्र निकुंजादिक में पधराय के ले जाय हैं । श्रीप्रभून के परिश्रम को विचार भी याने नहीं कियो, तातें 'तामस–तामस' भक्त है । या सगुण भक्तजन के समुदाय में विहार–वर्णन करिकें फिर सहचरी श्रीस्वामिनीजी तें कहे है—तुम्हारे मनहर्ता श्रीकृष्ण को यह 'रास' नाम रसन को समूह–विलास जो तुम देखो हो, सो तुम्हारे मनोरथ कूं भी पूर्ण करेंगे । अर्थात् तुम्हारी संमति तें दूसरे सब भक्तजनन के मनोरथ प्रभु पूर्ण करे हैं, परंतु तुमकों विप्रयोग बाधा करे है । सो अब प्रभु तुम्हारे पास पधार के तुम्हारे मनोरथ पूर्ण करे हैं । इति भावार्थ ।

॥ इति 'वसंत की अष्टपदी' की भाषा–टीका समाप्ता ॥

અરી, ચલિ નવલ કિસોરી....

◆

નિ. લી. ગો. શ્રી રત્નપ્રભા વહુજી 'કુમુદિની' (મથુરા–પોરબંદર)

◆

[પુષ્ટિમાર્ગીય ગદ્યપદ્યાત્મક સાહિત્યની શ્રીવૃદ્ધિમાં શ્રીવલ્લભકુલનાં વહુજી બેટીજીનું યોગદાન અત્યંત શ્લાઘનીય છે. સંપ્રદાયજગત, 'કુમુદિની' ઉપનામથી અનેક ગરબાઓની રચના કરનાર નિ. લી. શ્રી રત્નપ્રભા વહુજીથી સુપરિચિત છે. આ લેખક પાસે એમનું ગદ્યપદ્યાત્મક ઘણું જ અપ્રકાશિત સાહિત્ય છે, જે અનુકૂલ સમયે 'વૈશ્વાનર'માં પ્રકાશિત થતું રહેશે. પ્રસ્તુત ધમાર, પૂ. શ્રી ભાભીજીના ટેપ કરેલ પ્રવચન ઉપરથી એઓશ્રીના દ્વિતીય પુત્રરત્ન પૂ. પા. ગો. શ્રી રસિકરાયજી મહારાજના સૌજન્યથી અત્રે પ્રકાશિત થાય છે. **–તંત્રી**]

(રાગ–ગોરી)

અરી, ચલિ નવલ કિસોરી, ગોરી ભોરી હોરી ખેલન જાંઇ,
ઐસી નવલ જામિની, દેખિ ભામિની, ક્યોં તોહિ ભવન સુહાઈ. ૧

હોરી ખેલવાને માટે બધાં વ્રજભક્તો એકત્ર થયાં છે; પરંતુ શ્રી સ્વામિનીજીએ માન કર્યું હોવાથી એઓશ્રી પધાર્યાં નથી. વિશાખાજી એઓશ્રીને મનાવવા જાય છે અને કહે છે : 'અરે હે નવલ કિશોરી, હે ગોરી ! હે ભોળી ! ચાલો, આપણે હોળી ખેલવાને જઈએ. આવી સુંદર રાત્રિને જોઈને હે ભામિની ! તને આ ભવનમાં બેસી રહેવું કેમ ગમે છે?' (૧)

જહાઁ સબ બ્રજવર નર નારિન કે જૂથ જુરે હૈં આઇ,
શ્રીનંદનંદન પુનિ તહાઁ આયે, રંગીલે રસિકમનિ રાઇ. ૨

જ્યાં વ્રજનાં મોટા–મોટા ઘરનાં વ્રજસુંદરીઓ મોટા–મોટા યૂથમાં મળીને આવ્યાં છે. વળી ત્યાં નંદરાજકુમાર–શ્રીઠાકોરજી ખેલવાને માટે પધાર્યા છે. એ કેવા છે ? રંગીલા અને રસિકશિરોમણિ છે. રસિકોમાં ભૂષણરૂપ–મણિરૂપ, રસિકોના રાજા છે. (૨)

આલી, તિન મેં તૂ નહિ દેખી, તબ રહે ગયે નૈના નાઇ,
તબ ઇત ઉત તકિ મોહન પિય, મો તન તક્યો અરગાઇ. ૩

હે આલી ! હે સહેલી ! એમાં તને ન જોઈ ત્યારે એમનાં નયન ચકિત રહી ગયાં ! ત્યાર પછી આડું અવળું જોયું કે આમાં હું કોને મનાવવા માટે મોકલું ? જે ચતુરાઈથી વાત કરીને એમને પધરાવી લાવે, તેને જ મોકલું. પછી મારી તરફ જોઈને દૃષ્ટિ સ્થિર કરી. (૩)

તબ નૈનન હી મેં કહ્યો, કહા, મૈં કહ્યો ગ્રીવ ઢુરાઇ,
તબહિ રંગીલે કુંવર તોહિ પહિયાઁ, સેનનિ દઇ પઠાઇ. ૪

એઓશ્રીએ નેત્રથી જ એવો સંકેત કર્યો, એટલે મેં ગ્રીવા ઢુરાવીને–નીચી ગરદન કરીને નેત્રસંકેતથી 'હા' કહી. હે સ્વામિનીજી ! પછી મને પ્રભુએ નેત્ર સંકેત કરીને તમારી પાસે મોકલી છે. (૪)

તૂ જિન કરિ ગહરુ નાગરિ તિય, આનિ ભલો બન્યો દાઇ,
યહ સુનિ નવલ નવેલી સહચરી, મુસકિ નૈન દુરાઇ. ૫

હે નાગરી ! હે ચતુરશિરોમણિ, ! હવે તું વિલંબ ન કર. અત્યારે તું માન ન કર. અત્યારે કેવો સુંદર દાવ આવ્યો છે ? કેવા સરસ ખેલની રચના થઈ છે ! સહચરીનાં આ વચન સાંભળીને નવલ નવેલી શ્રીસ્વામિનીજી આડું જોઈને જરા મુસકાયાં. (૫)

ઇતને હી પરમ નિપુન સખિ પ્યારી, ભુજ ભરિ લઈ ઉઠાઇ,
ગહિ નવ કંચુકી સોંધે બોરી, બીરી દઈ બનાઇ. ૬

આટલું બોલીને પરમ ચતુર સખી વિશાખાજીએ પ્યારીજીને–શ્રીસ્વામિનીજીને પોતાની ભુજાથી ઉઠાવી લીધાં. પછી નવીન કંચુકી લઈને સોંધામાં બોળાને એઓશ્રીની સામે મૂકી અને બીડી બનાવીને સમર્પી. (૬)

પુનિ પદપીઠ પટોરન પોંછિકેં, આગેં ધરી સમુહાઇ,
ચલિ નવસત સજિ સ્વામિનિ, કામિનિ, સખિ કે અંસ ભુજ લાઇ. ૭

પછી પદપીઠ–સપાટને પોતાના પટોળાથી પોંછીને શ્રીસ્વામિનીજીની સંમુખ ધરી. (આથી શ્રીસ્વામિનીજી સમજી ગયાં કે મને પધરાવવા માટે જ વિશાખા આવેલ છે.) એટલે કામિની સ્વરૂપ શ્રીસ્વામિનીજીએ સોલહ સિંગાર ધારણ કર્યાં અને સખી વિશાખાજીના અંસ–ખભા ઉપર પોતાની ભુજા મૂકીને પધાર્યાં. (૭)

નવ ગુન નવલ રૂપ નવ જોબન, નવલ નેહ હુલસાઈ,
જાનો કનક ધાતુ પરવત પર, તડિત લતા ચમકાઇ. ૮

નવીન ગુણ, નવલ રૂપ, નવીન જોબન, નવીન સ્નેહ અને નવીન ઉલ્લાસ જેમને છે, એવાં શ્રીસ્વામિનીજી કેવાં છે ? જાણે સુવર્ણના પર્વત ઉપર વિદ્યુત્ લતા ચમકી રહી છે ! કનક ધાતુના પર્વતરૂપી વિશાખાજીનો ખભો છે, તેના ઉપર વિદ્યુત્ લતા જેવો શ્રીસ્વામિનીજીનો શ્રીહસ્ત છે. (૮)

ઝૂમક સારી પ્યારી પહેરેં, ચલત લલિત લહેકાઈ,
જનુ નવ રૂપ જોતિ જગમગ સોં, પવન લગે ઝુકરાઇ. ૯

ઝૂમક સાડી[1]–બહુ જ કોમલ અને સુંદરમાં સુદર સાડી શ્રીસ્વામિનીજીએ પહેરી છે અને તેની પાટલીને સુંદરતાથી લહેકાવી રહ્યાં છે ! જાણે દીવાની જ્યોતિને પવન લાગે અને તે ડોલવા લાગે, તેમ શ્રીસ્વામિનીજીએ જે સાડી ધરી છે, તે લટકાં કરીને ચાલવાથી પવનને લીધે ફરકી રહી છે. (૯)

લલિતાદિક સખિયન સંગ સુંદર સોભિત હૈ ઇહિ ભાઇ,
જનુ નવ કુમુદિન કે મંડલ મેં, ઇંદુ પગન ચલ્યૌ જાઈ. ૧૦

લલિતાદિક સખીઓની સાથે સુંદર શ્રીસ્વામિનીજી એવાં શોભાયમાન થઈ રહ્યાં છે કે, જાણે નવીન કુમુદિનીઓના મંડલમાં ચંદ્રમા પોતાના ચરણથી ચાલીને જઈ રહ્યો છે ! (૧૦)

---

૧. જે સાડીના મસ્તક ઉપર ઓઢવાના ભાગ ઉપર સોનાની ઘૂઘરીઓ અને મોતી ટાંકેલાં હોય તેને 'ઝૂમક સાડી' કહેવામાં આવે છે. (જુઓ : 'બ્રજ ભાષા કા સૂર–કોશ') –તંત્રી

કબહુક બદન દુરાય ઉઘારત, પુનિ હઁસિ લેત દુરાઇ,
મંજુલ મુકુર મરીચિન સી માનોં, છિન છિન છબિ અધિકાઇ. ૧૧

શ્રીસ્વામિનીજી વિનોદ કરતાં કરતાં પધારે છે. કોઈ વખત મુખારવિંદને પોતાની સાડીના પલ્લવથી ઢાંકી દે છે, અને ઉઘાડે છે. વળી પાછાં હસી લઈને મુખારવિંદને ફેરવી લે છે. એવા અનેક પ્રકારના વિનોદ સહેલીઓ સાથે કરી રહ્યાં છે. મંજુલ–સુંદર મુકુર કહેતાં આરસી, તે એકદમ ઝગમગી રહી છે; તે ઘડી ઘડી પ્રતિબિંબ કરતી હોય એમ લાગે છે. પ્રતિપલ એ છબી સુંદર ને સુંદર બનતી જાય છે. (૧૧)

પુનિ એક લટ છબિ સોં જુ છબીલી કી, બેસર રહી અરુઝાઇ,
જનુ પ્રીતમ મન મીન કી બડસી, ભખ મુક્તા લટકાઇ. ૧૨

છબીલી–શ્રીસ્વામિનીજીના શ્રીમસ્તકની એક અલક–લટ, તે બેસરના મોતીની સાથે અરુઝાઈ–ફસાઈ ગઈ છે, તે કેવી લાગે છે ? જાણે પ્રીતમના મનરૂપી મીન છે એની જાણે બડછી તે અલક, તેનું ભક્ષણ મોતી તે લટકાય છે.

સોભિત શ્રવનન સ્વેદ સુદંતિ કે, માનો પટે ચુચાઇ,
ચંચલ અંચલ છોર બિરાજત, નેંક ચલતિ જબ ધાઇ. ૧૩

જ્યારે ઉતાવળી ચાલે ચાલે છે, ત્યારે સાડીનો અંચલ–છેડો ચંચલ બની જાય છે. અને તેથી શ્રવણના પટા–કનપટી ઉપર શ્રમ–પ્રસ્વેદ ચૂઈ રહ્યો છે. તે એવું લાગે છે કે, જાણે મત્ત ગજરાજનાં લમણાં મદથી ચૂઈ રહ્યાં છે ! (૧૩)

નીવી બંદન કૂંદવા ઘંટા, કિંકિની ઘન ઘઘરાઇ,
નૂપુર ઊપર ચૂરા રૂરા, જનુ સૃંખલ જનકાઇ. ૧૪

નીવી લહેંગાની છે, એનું બંધન છે તે કુંદના છે. એમાં નાની ઘૂઘરીઓ છે, તે જાણે હાથીની ઘંટા લાગે છે. અને કિંકિણીનો રણકાર થઈ રહ્યો છે. નૂપુરની ઉપર સુંદર ચૂડો છે. તે જાણે હાથીના પગમાં સાંકળ પડી હોય એવો લાગે છે. અને ચાલવાથી ખનન ખનન અવાજ આવે છે. (૧૪)

સખિયન કે સંગ કુસુમ છડ઼િન તેં, અગડ઼ બને ચહુઁઘાઇ,
મદન મહાવત કો બલ નાહીં, અંકુસ દેત ડરાય. ૧૫

ચારે બાજુથી શ્રીસ્વામિનીજીને ઘેરીને ચાલતી સખીઓના શ્રીહસ્તમાં કુસુમની–ફૂલની છડીઓ છે, તે જાણે ગજરાજના અગડ઼ બનાવ્યા હોય એવું દેખાય છે ! છતાં આ ગજરાજ રોકી શકાય એમ નથી ! છડીથી ક્યાંથી રોકાય ? કામદેવરૂપી મહાવતનો અંકુશ પણ કામ આવતો નથી, તો કુસુમની છડીથી રોકાય ?

સખિયન મેં હિતૂ બિસેસ બિસાખા, જ્યોં તન કી પરછાંઇ,
નંદનંદન નિયરે જાનિ કેં, સહજ ઉઠી કછુ ગાઇ. ૧૬

બધાં સખીજનોમાં વિશાખાજી સર્વથી વહાલાં લાગે છે. કેમ જાણે શ્રીસ્વામિનીજીના શ્રીઅંગની પરછાઈ ન હોય ! એવી રીતે વિશેષ શોભાને ધારણ કરે છે. પ્રભુ શ્રીનંદરાજ-કુમારને પોતાની સંમુખ નીરખીને શ્રીસ્વામિનીજીના ઉત્સાહમાં વૃદ્ધિ કરવા માટે વિશાખાજી સહસા ગાન કરવા લાગ્યાં. (૧૬)

સબહિન જાન્યૌ શ્રીરાધાજૂ આઇ, ભયો ચૌગુનો ચાઇ,
જે હુતી નવલ કિસોરી કી સાથિન, તે દૌરી સમુહાઇ. ૧૭

જ્યારે બધાં વ્રજભક્તોએ જાણ્યું કે, શ્રીસ્વામિનીજી પધાર્યાં છે, ત્યારે એમના ઉત્સાહમાં અનેરી વૃદ્ધિ થઈ. અને શ્રીરાધાજીનાં જે સહેલીઓ હતાં, તે એકદમ દોડીને એમની સંમુખ આવી ગયાં. (૧૭)

તિન સંગ મોહન ધાયે આયે, માનો રંક મહાનિધિ પાઇ,
પ્રથમ હી લાલ જુહાર કિયો મૃદુ, મુરલી મધુર બજાઇ. ૧૮

તે સહેલીઓની સાથે મોહનવર શ્રીઠાકોરજી પણ દોડીને ત્યાં પધાર્યા, ત્યારે એવું લાગ્યું કે, જાણે રંકને મહાનિધિ પ્રાપ્ત થયો હોય ! ત્યારે શ્રીઠાકોરજીએ શ્રીસ્વામિનીજીને પ્રથમ મૃદુ અનુનય કરી મુરલીમાં મધુર ગાન કર્યું. (૧૮)

ઇતતેં કુટિલ કટાચ્છન પિયતન, ચિતઇ મૃદુ મુસકાઇ,
ચાઁચર દૈન લગી બ્રજ બીથિન, રંગીલે રંગ ઉપજાઈ. ૧૯

શ્રીસ્વામિનીજીએ કટાક્ષ સહિત મધુર મુસકાન દ્વારા શ્રીઠાકોરજી સામું જોયું અને વ્રજના માર્ગમાં ચાંચર દેવા લાગ્યાં. એનાથી રસિક પ્રભુના રંગમાં વૃદ્ધિ થઇ. (૧૯)

ગાવન લાગીં ગ્વાલિન ગારી, સુંદર લલહિં લગાઇ,
રાધાજુ ગાન સુન સુનિ હસિ હસિ, હરિ તન હેરિ લજાઇ. ૨૦

બધાં સખીજનો શ્રીઠાકોરજીને લગાડીને–તાકી તાકીને ગારી ગાવા લાગ્યાં. ગરી સાંભળીને શ્રીરાધાજી હસી હસીને શ્રીઠાકોરજી સામું નિહાળીને લજ્જિત થઈ ગયાં. (૨૦)

લલન અબીર ભરત ગોરી ગ્વાલિન, પ્રાનપિયા હિં બચાઇ,
સો સુખ પિય નૈના હી જાનત, મો મન મેં ન સમાઇ. ૨૧

સખીજનો શ્રીઠાકોરજીના શ્રીઅંગને અબીરથી ભરી રહ્યાં છે અને પ્રાણપ્યારી શ્રીસ્વામિનીજીને બચાવી રહ્યાં છે. એ સમયના સુખને શ્રીઠાકોરજીનાં નેત્રો જ પહેચાને છે. કવિ કહે છે કે, એ મારા મનમાં સમાતું નથી. (૨૧)

ઔર જુ પ્રેમવિવસ કો સુખ, કહત કહ્યો નહિ જાઇ,
યહ સુખ કહિવે કોં સરસુતી કી, કોટિક સુમતિ હરાઇ. ૨૨

જુગલ સ્વરૂપના અને વ્રજભક્તોના પ્રેમવિવશતાના સુખને શબ્દ દ્વારા કહી શકાય એમ નથી. એ સુખનું વર્ણન કરવાને માટે સરસ્વતીની કોટિક પ્રકારની સુમતિ પણ હરાઈ જાય છે. (૨૨)

સેસ મહેસ સુરેસ ન જાનૈં, અજ અજહૂઁ પછતાઇ,
સો રસ રમા તનક નહિં પાયો, જદ્દપિ પલોટત પાઁઇ. ૨૩

એ રસને શેષ ન જાણી શકે; મહેશ–શંકર અને સુરેશ–ઇંદ્ર પણ જાણી શકતા નથી; બ્રહ્મા પણ હજી સુધી પસ્તાય છે કે, અમે ત્યાં સુધી પહોંચી શકયા નહીં ! એ સુખને રમા–લક્ષ્મીજી લેશમાત્ર પામી શકયાં નથી. યદ્યપિ નિત્ય ચરણકમલની સેવા કરે છે તો પણ એ રસને પ્રાપ્ત કરી શકયાં નથી. (૨૩)

श्रीवृषभानु सुता पद अंबुज, जिनके सदा सहाई,
इहि रस मगन रहत जे तिन पर, 'नंददास' बलि जाइ. २४

શ્રીવૃષભાનુ સુતા–શ્રીસ્વામિનીજીના ચરણકમલથી જેમને સહાય છે અને એ રસમાં જે નિરંતર મગ્ન રહે છે, તેના ઉપર 'નંદદાસજી' કહે છે કે, હું બલિહારી જાઉં છું. (૨૪)

'વૈશ્વાનર'ના સેવાભાવી પ્રચારકો

અમદાવાદ : (૧) (મણિનગર) શ્રી બાલમુકુંદ લાલાજી, (૨) ડૉ. સોમાભાઈ એમ. ગાંધી, (૩) ચિમનલાલ નાનાલાલ બૅન્કર, (૪) કરશનદાસ ત્રિકમદાસ ભાટિયા, (૫) કાન્તિલાલ ગો. શાહ, ધના સુથારની પોળ, **ઉપલેટા :** મુખિયાજી કાકુભાઈ આણંદજી, **ઉમરેઠ :** ઈન્દુકુમાર ઓચ્છવલાલ ગાંધી, **કલકત્તા :** અમરશી હંસરાજ ખડાયતા, **કાલોલ :** નટવરલાલ કેશવલાલ સોની, **ગોંડલ :** (૧) મોહનલાલ રતિલાલ લાઠીગરા, (૨) મગનલાલ સામજી દરજી, **ચીખલી :** ધીરૂભાઈ છોટાલાલ શેઠ, **ચોરવાડ :** ગોવિંદલાલ માધવજી, **છોટા ઉદેપુર :** વિઠ્ઠલદાસ વ. શાહ, **જામનગર :** ગોકલદાસ લાલજી રાજાણી, **થાણા :** બળવંત આર. કારિયા, **ધારી :** માસ્તર છગનલાલ તારાચંદ, **ધોરાજી :** હિતકરરાય વલ્લભદાસ લાઠીગરા, **ધોળકા :** જીવણદાસ શંભુલાલ શાહ, **પાટણ :** રસિકલાલ જમનાદાસ શાહ, **ભાવનગર** (૧) ઈન્દુલાલ નાનાલાલ પરીખ, (૨) કરશનદાસ કે. વસાણી, (૩) અમૃતલાલ ભગવાનદાસ, **મહેસાણા :** રમણલાલ ભીખાભાઈ શાહ, **માણાવદર :** ચંદુલાલ ગોરધનદાસ કંસારા, **મુંબઈ** (૧) ગિરિધરલાલ જ. શાહ 'બુકસેલર', (૨) મણિબાઈ ખીમજી દત્તાણી, શ્રીનાથજી સત્સંગ સેવા મંડલી, (૩) હરિદાસ ગોકુલદાસ, શ્રીવનમાલાજી મંદિર, **મોરબી :** ભગવાનદાસ વેલજી અત્રી, **રાણાવાડોત્રા :** હરમુખલાલ પી. લાખાણી, **વડોદરા :** અરવિંદભાઈ ચંદુલાલ મહેતા, **વિલેપારલે** (પશ્ચિમ) **:** કાંતિલાલ બી. કડકિયા, **વિલેપારલે** (પૂર્વ) **:** લક્ષ્મીબહેન એચ. વોરા, **વીરમગામ :** શ્રી વૈષ્ણવ મંડલ, C/o. જે. એન. પોપટ, **વેરાવળ :** નરોત્તમદાસ ભૂરાભાઈ પટેલ, **રાજકોટ :** રમણિકલાલભાઈ ધોળકિયા, **રાધનપુર :** મફતલાલ પુ. માસ્તર, **સરધાર :** ચૂનીલાલ ગિરધરલાલ કંસારા, **સાવલી :** જેઠાલાલ છો. શાહ 'ઊર્મિલ'.